BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

ज्ञान भारतम मिशन

10 सितंबर 2025

मुख्य विशेषताएं

- ज्ञान भारतम मिशन भारत की विशाल पांडुलिपि विरासत को संरक्षित करने, डिजिटाइज़ करने और प्रचारित करने के लिए एक राष्ट्रीय पहल है। यह मिशन भावी पीढ़ियों के लिए प्रौद्योगिकी के साथ परंपरा को जोड़ता है। मिशन को **482.85 करोड़ रुपये (2024-31)** आवंटित किए गए हैं, जिसमें **44.07 लाख से अधिक पांडुलिपियां** पहले से ही कृति संपदा *डिजिटल रिपॉजिटरी* में प्रलेखित हैं।
- ज्ञान भारतम सम्मेलन पहला अंतरराष्ट्रीय मंच है जिसने भारत की पांडुलिपि विरासत को संरक्षित और डिजिटाइज़ करने के लिए चर्चा, विचार-विमर्श और आगे का रास्ता तैयार करने के लिए देश भर के हितधारकों को आमंत्रित किया है।
- ज्ञान भारतम सम्मेलन में 1,400 **से अधिक युवा प्रतिभागी** और **500 प्रतिनिधि** शामिल हुए, जो भविष्य के लिए मजबूत संरक्षण को दर्शाता है।
- भारत की पांडुलिपि विरासत को विश्व स्तर पर सुलभ बनाने के लिए **अत्याधुनिक** डिजिटल उपकरण और एआई नवाचार महत्वपूर्ण हैं।

परिचय

सदियों से, भारत के विचारों और रचनात्मकता की सभ्यतागत संपदा लगातार प्रासंगिक रही है और यह आज के डिजिटल युग में नए सिरे से अभिव्यक्ति पा रही है। विचारकों की पीढ़ियों को पोषित करने वाले गुरुकुलों से लेकर नालंदा और तक्षशिला के महान विश्वविद्यालयों तक, जिन्होंने दुनिया भर के विद्वानों को अपनी ओर आकर्षित किया, शिक्षा हमारी सभ्यता का केंद्र रही है। इस विशाल परंपरा

को पांडुलिपियों, स्मारकों और सांस्कृतिक प्रथाओं में सावधानीपूर्वक संरक्षित किया गया था जो एक साथ मिलकर हमारी पहचान की आधारशिला हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, डिजिटल इंडिया के परिवर्तनकारी अभियान ने इस बात को फिर से परिभाषित किया है कि नागरिक शासन, अवसरों और संस्कृति से कैसे जुड़ते हैं। गांवों को भारतनेट के माध्यम से हाई-स्पीड इंटरनेट से संचालित किया जाता है, आधिकारिक दस्तावेजों को [1]डिजिलॉकर में सुरक्षित रूप से संग्रहीत किया जाता है[2], नागरिक उमंग ऐप के माध्यम से सैकड़ों सेवाओं का लाभ उठाते[3] हैं, परिवार ई-हॉस्पिटल के माध्यम से अधिक आसानी से स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच बनाते[4] हैं, और परिवर्तनकारी यूपीआई के माध्यम से वित्तीय समावेशन सशक्त हुआ है[5]। अब, डिजिटल उपकरण हमारी विरासत की रक्षा भी कर रहे हैं। इतना ही नहीं ये भविष्य की पीढ़ियों के लिए अमूल्य खजाने की सुरक्षा में अभिलेखागार, संग्रहालयों और भंडारों का समर्थन कर रहे हैं।

इस भावना के साथ, संस्कृति मंत्रालय 11 से 13 सितंबर 2025 तक विज्ञान भवन, नई दिल्ली में "पांडुलिपि विरासत के माध्यम से भारत की ज्ञान विरासत की पुनर्प्राप्ति" विषय पर पहले ज्ञान भारतम अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन कर रहा है। सम्मेलन में देश और विदेश के विद्वानों, विशेषज्ञों, संस्थानों और सांस्कृतिक चिकित्सकों सहित 1,100 से अधिक प्रतिभागी शामिल होंगे। यह चर्चा, विचार-विमर्श और भारत की पांडुलिपि विरासत को दुनिया के साथ संरक्षित करने, डिजिटलीकरण करने और साझा करने के लिए आगे बढ़ने के तरीके को आकार देने के लिए एक सकारात्मक मंच तैयार करेगा।

ज्ञान भारतम मिशन को एक दूरदर्शी राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में शुरू किया जा रहा है जो भारत की विशाल पांडुलिपि विरासत के संरक्षण, डिजिटलीकरण और प्रचार के लिए समर्पित है।[6] यह मिशन हमारी सभ्यतागत जड़ों के लिए एक सम्मान है और 2047 तक एक विकसित भारत के प्रधानमंत्री के विजन की दिशा में एक अग्रगामी कदम **है, जहां भारत अपने** अतीत के ज्ञान को अपने भविष्य के नवाचार के साथ जोड़कर **सचमुच एक विश्व गुरु** के रूप में उभरता है।

ज्ञान भारतम सम्मेलन[7]

सम्मेलन का अवलोकन

ज्ञान भारतम सम्मेलन, विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 11-13 सितंबर 2025 तक आयोजित होने वाली तीन दिवसीय ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय सभा है, जो ज्ञान भारतम मिशन के औपचारिक शुभारंभ का प्रतीक है। इसका समय बहुत प्रतीकात्मक है - 1893 में शिकागो में स्वामी विवेकानंद के ऐतिहासिक संबोधन की वर्षगांठ के साथ तालमेल रखता है। यह एक ऐसा क्षण रहा जिसने भारत के ज्ञान और आध्यात्मिकता की आवाज को वैश्विक मंच पर पहुंचाया। इसी भावना के साथ, सम्मेलन का उद्देश्य

[1] https://usof.gov.in/en/bharatnet-project
[2] https://www.digilocker.gov.in/
[3] https://web.umang.gov.in/landing/
[4] https://ehospital.gov.in/ehospitalsso/
[5] https://www.digitalindia.gov.in/initiative/unified-payment-interface-upi/
[6] https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2114400
[7] https://www.gbm-moc.in/

ज्ञान की सभ्यता के रूप में भारत की भूमिका की पुष्टि करना है, जो अब प्रौद्योगिकी से सशक्त है और दुनिया के साथ अपनी विरासत साझा करने के लिए तैयार है।

यह सम्मेलन प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों, वैश्विक विद्वानों और सांस्कृतिक संरक्षकों को एक साथ लाता है, जो "विरासत और विकास" की सोच के तहत विरासत को नवाचार के साथ मिश्रित करने के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन को दर्शाता है। हाइब्रिड मोड में आयोजित इस सम्मेलन में लगभग 500 प्रतिनिधियों और 75 आमंत्रित विशेषज्ञों की भागीदारी के साथ एक उद्घाटन और समापन सत्र, 4 पूर्ण सत्र और 12 तकनीकी सत्र शामिल हैं।

यह चर्चा अनेक विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला- पांडुलिपियों का संरक्षण और पुनरूद्धार, सर्वेक्षण और प्रलेखन मानकों, डिजिटलीकरण उपकरण और प्लेटफार्म, हस्तलिखित पाठ की पहचान और लिपि की व्याख्या, अनुवाद और प्रकाशन संरचना, शिक्षा और संस्कृति के साथ एकीकरण, पांडुलिपि में क्षमता निर्माण, और कॉपीराइट तथा कानूनी मुद्दे पर केंद्रित है।

सत्र[8] और भागीदारी

Schedule for 3 day International Conference

DAY I : IITH SEPTEMBER 2025

Session	Theme / Details
Opening Session	–
Technical Sessions 1–6	Working Group Presentations (Survey & Documentation, Manuscriptology, Digitisation Tools, Safeguarding Manuscript Heritage, Decipherment of Scripts, Gyan Setu)
Technical Sessions 7–12	Working Group Presentations (Conservation, Decoding Manuscripts, Cultural Diplomacy, Legal & Ethical Frameworks, Gyan Setu, Repatriation)
Academic Sessions 1–6	Parallel papers on Survey, Manuscriptology, Indian Knowledge System, Conservation, Decipherment, Gyan Setu
Academic Sessions 7–12	Parallel papers on Digitization, Indian Knowledge System, Legal Frameworks, Conservation, Decipherment, Gyan Setu

DAY 2 : I2TH SEPTEMBER 2025

Session	Theme / Details
Academic Sessions 13–16	Decoding Manuscripts, Manuscriptology, Cultural Diplomacy, Decipherment
Academic Sessions 17–20	Survey & Documentation, Indian Knowledge System, Conservation, Decipherment
Special Talk	Acharya Shri Balkrishna, Patanjali Ayurved
Special Session with Hon'ble PM of India	**Keynote Session**

DAY 3 : I3TH SEPTEMBER 2025

Session	Theme / Details
Academic Sessions 21–26	Decoding Manuscripts, Manuscriptology, Survey & Documentation, Cultural Diplomacy, Decipherment, UNESCO Memory of the World
Panel Discussion	*Road Map for Gyan Bharatam: From Memory and Manuscript to Digital Future*
Invited Presentations	Survey and Documentation, Digitisation, Indian Knowledge System, Manuscriptology
Valedictory Ceremony	Themes: Survey & Documentation; Digitisation; Indian Knowledge System; Manuscriptology

प्रतिभागियों में 95 से अधिक शिक्षाविद, सरकारी और निजी क्षेत्रों के 22 प्रशासक, 179 पेशेवर, 112 स्कॉलर, 230 छात्र और विभिन्न क्षेत्रों के 400 से अधिक प्रतिनिधि शामिल हैं। सम्मेलन में 17 राष्ट्रीय वक्ता और 17 अंतरराष्ट्रीय वक्ता भी शामिल हैं, जो भारत और विदेशों के विविध दृष्टिकोणों को एक साथ लाते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अक्सर इस बात पर प्रकाश डाला है कि राष्ट्र का भविष्य

[8] https://www.gbm-moc.in/assets/pdf/schedule-detailed.pdf

युवाओं के हाथों में है। डिजिटलीकरण, एआई उपकरणों और आधुनिक प्लेटफार्मों द्वारा प्राचीन ग्रंथों तक पहुंचने और उनकी व्याख्या करने के नए तरीके खोलने के साथ, मिशन युवाओं को विरासत को अपनी यात्रा के हिस्से के रूप में देखने के लिए प्रेरित कर रहा है- कुछ ऐसा जो संरक्षित करने, अध्ययन करने और गर्व से भविष्य की ओर ले जाने के लिए है।[9]

सम्मेलन-पूर्व कार्य समूह

ज्ञान भारतम अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की तैयारी में, **आठ विशेष कार्य समूहों की एक श्रृंखला का** गठन किया गया है, जो विद्वानों, शोधकर्ताओं और सांस्कृतिक क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों की एक विस्तृत श्रृंखला को आपस में जोड़ता है। ये समूह मिशन के व्यापक दृष्टिकोण को दर्शाते हैं, पांडुलिपि संरक्षण और ज्ञान एकीकरण के हर आयाम का समाधान करते हैं।

कुल मिलाकर, ये कार्य समूह पुरातत्व और संरक्षण विज्ञान, कानून, प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक कूटनीति से विविध विशेषज्ञता लाते हैं। उनके विचार-विमर्श मिशन के रोडमैप को आकार दे रहे हैं। इससे यह सुनिश्चित होता है कि **ज्ञान भारतम सम्मेलन** न केवल विरासत का उत्सव है, बल्कि व्यावहारिक रणनीतियों और भविष्य के लिए तैयार समाधानों के लिए एक मंच भी है।

[9] https://www.gbm-moc.in/assets/pdf/participants.pdf

ज्ञान-सेतु: राष्ट्रीय एआई इनोवेशन चैलेंज

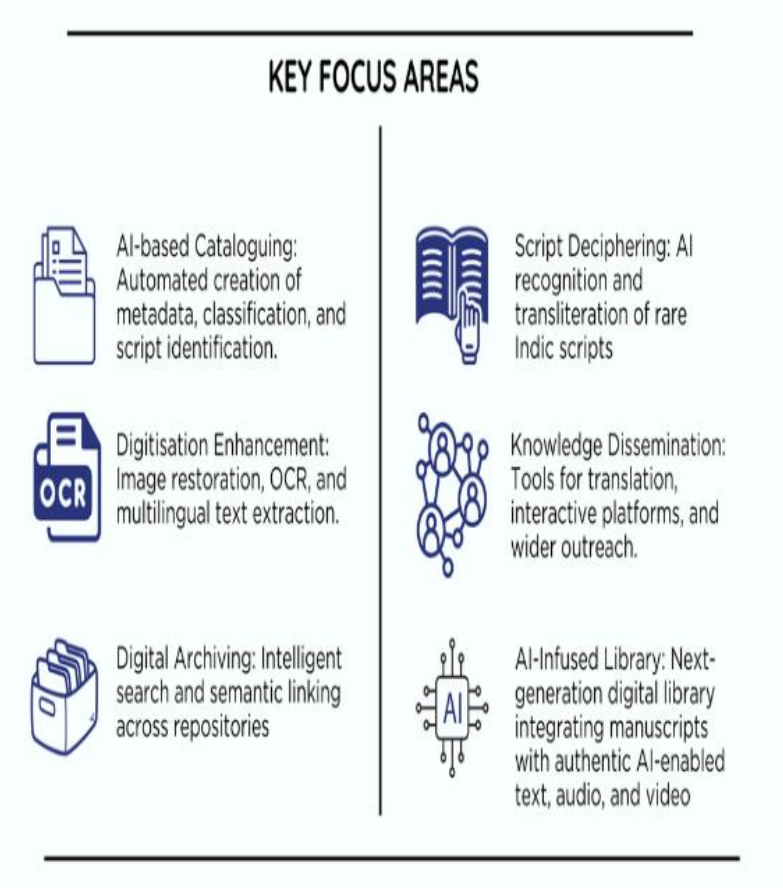

"पांडुलिपि विरासत के माध्यम से भारत की ज्ञान विरासत की पुनर्प्राप्ति" विषय *पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के हिस्से के रूप में*, संस्कृति मंत्रालय ने ज्ञान भारतम मिशन के तहत एक राष्ट्रीय एआई इनोवेशन चैलेंज ज्ञान-सेतु शुरू किया है। यह पहल विरासत की सुरक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए युवाओं और नवप्रवर्तकों को सशक्त बनाने के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन को दर्शाती है। दर्शन और चिकित्सा से लेकर शासन और कला तक के विषयों में फैली 10 मिलियन से अधिक पांडुलिपियों के साथ, इस चैलेंज का उद्देश्य इस विरासत को दुनिया के लिए अधिक सुलभ और सार्थक बनाने के लिए एआई का इस्तेमाल करना है।

छात्रों, शोधकर्ताओं, संस्थानों और स्टार्ट-अप के लिए भागीदारी के अवसर खोलकर, ज्ञान-सेतु विरासत संरक्षण को एक सामूहिक राष्ट्रीय प्रयास के रूप में स्थापित करता है। यह पांडुलिपियों को नाजुक कलाकृतियों से सीखने और नवाचार के जीवंत स्रोतों में बदल देता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा नई ताकत के साथ आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचे।

अपेक्षित परिणाम

इस ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के माध्यम से ज्ञान भारतम मिशन को भारत की पांडुलिपि विरासत की पुनर्प्राप्ति, संरक्षण और वैश्वीकरण में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखा जा रहा है। यह विश्व स्तर पर एक बौद्धिक अग्रणी बनने के भारत के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए विद्वानों के नवाचार को प्रेरित करने, सभ्यतागत गौरव को मजबूत करने, तकनीकी सशक्तिकरण का उपयोग करने और सांस्कृतिक कूटनीति का विस्तार करने का प्रयास करता है।

मुख्य परिणाम:

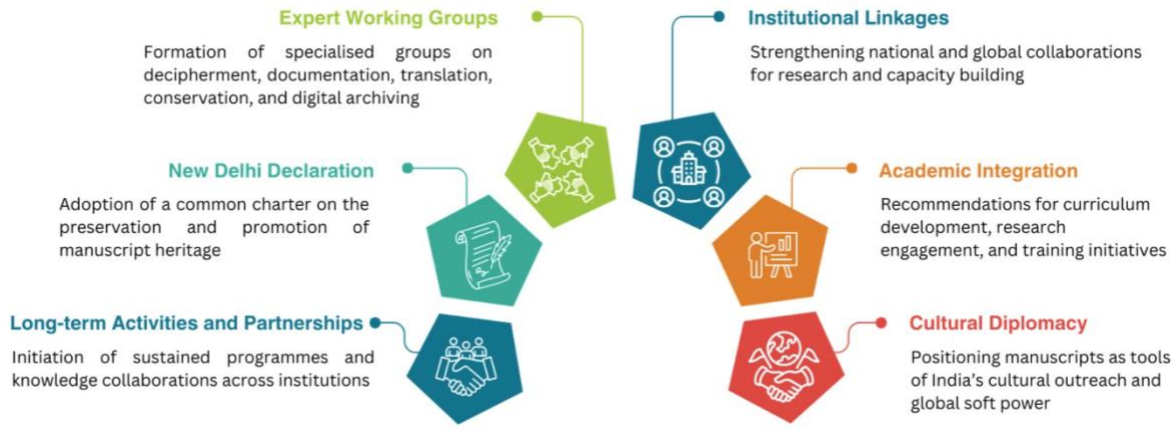

ज्ञान भारतम मिशन का विजन और उद्देश्य

भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत इसकी विशाल पांडुलिपि संपदा में परिलक्षित होती है, जिसका अनुमान है कि यह पांच मिलियन से अधिक कृतियों में सन्निहित है। ये ग्रंथ दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, गणित, खगोल विज्ञान, साहित्य, कला, वास्तुकला और आध्यात्मिकता जैसे विषयों को कवर करने वाले ज्ञान की एक महत्वपूर्ण श्रृंखला में फैले हुए हैं। वे कई लिपियों और भाषाओं में लिखे गए हैं और मंदिरों, मठों, जैन भंडारों, अभिलेखागार, पुस्तकालयों और निजी संग्रहों में सुरक्षित हैं। साथ में, वे भारतीय ज्ञान परंपरा (भारतीय ज्ञान प्रणाली) का एक अद्वितीय रिकॉर्ड बनाते हैं[10] और भारत के सभ्यतागत विचार की निरंतरता को दर्शाते हैं।

चालू वित्त वर्ष (2025-26) में मिशन हेतु 60 करोड़ रुपये का आवंटन[11] किया गया है, जिसे 482.85 करोड़ रुपये के कुल परिव्यय के साथ 2024-31 की अवधि के लिए केंद्रीय क्षेत्र की योजना के रूप में अनुमोदित किया गया है।[12]

क्रमबद्ध विवरण[13]

[10] https://www.gbm-moc.in/conference
[11] https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2159093
[12] https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2114400&utm
[13] https://moc.php-staging.com/gyan-bharatam-mission

ज्ञान भारतम मिशन के उद्देश्य

ज्ञान भारतम मिशन को संरक्षण, डिजिटलीकरण, छात्रवृत्ति और वैश्विक पहुंच के संयोजन से भारत की पांडुलिपि विरासत को पुनर्जीवित करने के लिए एक व्यापक ढांचे के रूप में डिजाइन किया गया है। इसके उद्देश्य भौतिक संग्रह की सुरक्षा से परे हैं, उनका उद्देश्य पांडुलिपियों को शिक्षा, अनुसंधान और सांस्कृतिक गौरव[14] के लिए एक जीवंत संसाधन के रूप में पुन: स्थापित करना है।

पहचान और प्रलेखन: पांडुलिपि संसाधन केंद्रों (एमआरसी) का एक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क स्थापित किया जाएगा ताकि संस्थानों और निजी संग्रहों में बिखरी प्राचीन पांडुलिपियों की व्यवस्थित रूप से पहचान, दस्तावेजीकरण और कैटलॉग किया जा सके और एक प्रामाणिक और विश्वसनीय राष्ट्रीय पंजी तैयार की जा सके।

संरक्षण और पुनरुद्धार : मजबूत पांडुलिपि संरक्षण केंद्रों (एमसीसी) के माध्यम से, पांडुलिपियों को निवारक और उपचारात्मक संरक्षण विधियों का उपयोग करके संरक्षित किया जाएगा, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि पारंपरिक प्रथाओं का सम्मान करते हुए नाजुक और लुप्तप्राय ग्रंथों को वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया जाए।

डिजिटलीकरण और रिपॉजिटरी का सृजन : मिशन एआई- समर्थित हस्तलिखित पाठ पहचान (एचटीआर), माइक्रोफिल्मिंग और क्लाउड-आधारित मेटाडेटा सिस्टम का उपयोग करके पांडुलिपियों के बड़े पैमाने पर डिजिटलीकरण की परिकल्पना करता है। यह एक राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉजिटरी के निर्माण में मदद करेगा, जिसे विश्व स्तर पर सुलभ बनाने के लिए डिजाइन किया गया है।

अनुसंधान, अनुवाद और प्रकाशन: दुर्लभ और अप्रकाशित पांडुलिपियों को महत्वपूर्ण संस्करणों, प्रतिकृतियों और अनुवादों के माध्यम से पुनर्जीवित किया जाएगा, जिससे उन्हें भारत की बौद्धिक विरासत को वैश्विक छात्रवृत्ति में शामिल करने के लिए कई भाषाओं में सुलभ बनाया जा सकेगा।

क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण: विशेषज्ञों की एक नई पीढ़ी तैयार करने के लिए प्रतिलेखन, जीवाश्म विज्ञान, संरक्षण और पांडुलिपि अध्ययन में सुव्यवस्थित प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ-साथ कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी। यह संस्थागत क्षमता को मजबूत करेगा और क्षेत्र के लिए समर्पित विद्वानों, संरक्षकों और प्रतिलेखकों का पोषण करेगा।

[14] https://www.gbm-moc.in/conference

प्रौद्योगिकी विकास: मिशन पांडुलिपियों के लिए डिजिटल टूल बनाने पर भी ध्यान केंद्रित करेगा, जिसमें मोबाइल एप्लिकेशन, सुरक्षित क्लाउड स्टोरेज समाधान और इंटरनेशनल इमेज इंटरऑपरेबिलिटी फ्रेमवर्क (आईआईएफ) पर आधारित प्लेटफॉर्म शामिल हैं, जिससे कुशल संरक्षण और व्यापक पहुंच सक्षम हो सकेगी।

जुड़ाव और प्रोत्साहन: सार्वजनिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए, पांडुलिपि संरक्षकों और संग्राहकों को प्रामाणिकता प्रमाणन और राजस्व-साझाकरण के माध्यम से अपने संग्रह को साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। पांडुलिपि अनुसंधान भागीदार कार्यक्रम प्रदर्शनियों, डिजिटल सामग्री, संग्रहालयों और नवाचार प्रयोगशालाओं के माध्यम से युवा स्कॉलरों को शामिल करेगा।

वैश्विक सहयोग और शिक्षा: पांडुलिपि की पुनर्प्राप्ति, डिजिटलीकरण और मानकीकरण के लिए अंतरराष्ट्रीय साझेदारी को बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे वैश्विक ज्ञान के आदान-प्रदान में भारत का नेतृत्व सुनिश्चित होगा। पांडुलिपि से प्राप्त ज्ञान को पाठ्यक्रम, उच्च शिक्षा अनुसंधान और कौशल विकास कार्यक्रमों में शामिल किया जाएगा, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि प्राचीन अंतर्दृष्टि आधुनिक शिक्षा को प्रेरित और जागरूक करती रहे।

साथ ही, ये उद्देश्य **ज्ञान भारतम मिशन को** संरक्षण के प्रयास से कहीं अधिक स्थान देते हैं। यह इस बात का खाका है कि डिजिटल युग में विरासत कैसे पनप सकती है। यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के डिजिटल इंडिया के दृष्टिकोण **और** "विरासत और विकास" **के राष्ट्रीय संकल्प के साथ सहजता से मेल खाता है।** यह एक ऐसी प्रगति के तौर पर है जो विरासत में मजबूती से निहित है। यह सुनिश्चित करता है कि जैसे-जैसे भारत विकसित *भारत @2047 की ओर बढ़ रहा है*, इसके सभ्यतागत ज्ञान के संरक्षण को एक जश्न के तौर पर दुनिया के साथ साझा किया जा रहा है।

मिशन की नींव

पांडुलिपियों के लिए राष्ट्रीय मिशन

एक पांडुलिपि ताड़ के पत्ते, भोजपत्र, कपड़े, कागज, या यहां तक कि धातु जैसी सामग्रियों पर एक हस्तलिखित रचना है, जो कम से कम पचहत्तर साल पुरानी है और महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, वैज्ञानिक या सौंदर्य मूल्य रखती है। मुद्रित पुस्तकों या प्रशासनिक अभिलेखों के विपरीत, पांडुलिपियों में **ज्ञान सामग्री** शामिल होती है। इसमें दर्शन, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, साहित्य और कला जैसे विविध विषयों को शामिल किया जाता है। वे सैकड़ों भाषाओं और लिपियों में पाए जाते हैं, कभी-कभी एक ही भाषा को अक्सर कई लिपियों में दर्शाया जाता है। देवनागरी, उड़िया और ग्रंथ लिपियों की संस्कृत भाषा में पांडुलिपि इसका एक उदाहरण है।[15]

[15] https://www.namami.gov.in/what-is-menuscript

इस विशाल संपदा को संरक्षित करने के लिए, **राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (एनएमएम)** की स्थापना 2003 में एक भंडार के रूप में की गई थी। यह भारत की बौद्धिक परंपराओं की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण रहा है। मिशन में शामिल है:

अपने महत्वाकांक्षी डिजिटल भंडार, *कृति संपदा के माध्यम से 44.07 लाख से अधिक पांडुलिपियों का दस्तावेजीकरण किया।*

सटीक और समान दस्तावेज़ीकरण सुनिश्चित करने के लिए वैश्विक मेटाडेटा मानकों पर आधारित एक सॉफ्टवेयर **मानुस ग्रंथावली** विकसित किया।

सरस्वती महल लाइब्रेरी (तंजावुर), रामपुर रजा लाइब्रेरी (रामपुर) **और** खुदा बख्श लाइब्रेरी (पटना) **जैसे प्रमुख रिपॉजिटरी के साथ भागीदारी** की, साथ ही देश भर में हजारों कम-ज्ञात संग्रहों को भी प्रकाश में लाया।

अपनी कैट-कैट (कैटलॉग का डेटाबेस) **पहल के तहत पांडुलिपियों के** 2,500 से अधिक मुद्रित कैटलॉग *संकलित किए।* इस पूरी प्रक्रिया में यह सुनिश्चित किया गया है कि सूचीबद्ध कार्यों को भी राष्ट्रीय रिकॉर्ड में एकीकृत किया जाए।

यह विरासत अब एक मजबूत आधार प्रदान करती है जिस पर ज्ञान **भारतम मिशन** भविष्य के लिए एक विस्तृत और प्रौद्योगिकी-संचालित ढांचे का निर्माण कर रहा है[16]।

एनईपी 2020 के तहत शिक्षा और भारतीय ज्ञान प्रणाली

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 उन नींवों को मजबूत करती है जिन पर **ज्ञान भारतम मिशन** टिका हुआ है। कम से कम ग्रेड 5 तक **मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा** में शिक्षण को प्रोत्साहित करके, एनईपी यह सुनिश्चित करती है कि बच्चे भारत की भाषायी और सांस्कृतिक परंपराओं में निहित रहते हुए अधिक प्रभावी ढंग से सीखें।

नीति में भारतीय भाषाओं, कलाओं और विरासत को बढ़ावा देने **का भी आह्वान किया गया है,** जो खो गया है उसे संरक्षित करने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए परंपराओं को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता को पहचानता है। यह दृष्टिकोण भारत के सभ्यतागत ज्ञान के जीवंत रिकॉर्ड के रूप में पांडुलिपियों को संरक्षित करने के मिशन के काम के साथ सीधे मेल खाता है।

गौरतलब है कि एनईपी भारतीय **ज्ञान प्रणाली (आईकेएस)** को पाठ्यक्रम में शामिल करती है, जो विज्ञान, दर्शन, चिकित्सा और साहित्य के क्षेत्र में प्राचीन योगदान को आधुनिक शिक्षा का हिस्सा बनाती है। यह प्रयास नवाचार को अपनाते हुए युवाओं को विरासत के संरक्षक बनने के लिए सशक्त बनाने के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन के अनुरूप है। एनईपी 2020 और ज्ञान भारतम मिशन मिलकर यह सुनिश्चित करेंगे कि **अतीत का ज्ञान भविष्य की ताकत बने।**[17]

---

[16] https://www.namami.gov.in/manuscript-database
[17] https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

आज के संदर्भ में प्रासंगिकता

ज्ञान भारतम मिशन यह दर्शाता है कि कैसे भारत डिजिटल इंडिया की परिवर्तनकारी शक्ति को विरासत के दायरे में विस्तारित कर रहा है। जिस तरह यूपीआई ने भुगतान के क्षेत्र में क्रांति ला दी और दीक्षा ने शिक्षा की फिर से परिकल्पना की, उसी तरह ज्ञान भारतम मिशन पांच मिलियन से अधिक पांडुलिपियों को संरक्षित और साझा करने के लिए एआई-संचालित कैटलॉगिंग, डिजिटल रिपॉजिटरी, स्क्रिप्ट डिक्रिप्ट और बहुभाषी प्लेटफार्मों का उपयोग कर रहा है। यह न केवल संरक्षण के बारे में है, बल्कि दुनिया भर की कक्षाओं, शोध केंद्रों और डिजिटल पुस्तकालयों में भारत के कालातीत ज्ञान को सुलभ बनाने के बारे में है।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के लिए 1,400 से अधिक छात्रों और विद्वानों के पंजीकरण के साथ, और अगली पीढ़ी के उपकरणों को डिजाइन करने के लिए स्टार्ट-अप और इनोवेटर को आमंत्रित करने के लिए ज्ञान-सेतु एआई इनोवेशन चैलेंज जैसी पहलों के साथ, यह प्रयास युवा भारतीयों को विरासत को दूर की कलाकृतियों के रूप में नहीं बल्कि प्रौद्योगिकी के माध्यम से फिर से परिकल्पना करने वाले जीवंत ज्ञान के रूप में देखने के लिए प्रेरित कर रहा है।

सभ्यतागत विरासत, डिजिटल सशक्तिकरण और युवा नवाचार को एक साथ लाने में, यह मिशन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के एक विकसित भारत को आकार देने के बड़े लक्ष्य को दर्शाता है, जिसका विश्व स्तर पर सम्मान हो। ज्ञान भारतम मिशन यह सुनिश्चित करता है कि जैसे-जैसे भारत विकास के क्रम में आगे बढ़ रहा है, वह अपनी विरासत को संरक्षित करते हुए अपने युवाओं को शामिल करके अपने ज्ञान को गर्व से दुनिया के साथ साझा करता है।

पीके/केसी/एसकेएस/एसके